>

Title: Need to include the cultivation of Paan (Beetel leaf) crop under National Horticulture Mission.

श्री पन्ना लाल पुनिया (बाराबंकी): सभापति महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे अति महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया।

महोदय, मैं पान की खेती करने वाले किसानों की समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षण करना चाहता हूं। भारत में लगभग तीस हजार हेक्टेयर पर पान की खेती की जाती है। जिससे करीब दो करोड़ लोगों को रोज़ रोजगार मिलता है। पान एक औषधीय वनस्पति है, जिसका उपयोग औषधि बनाने के साथ-साथ मुख शद्धि तथा पूजा पाठ इत्यादि में किया जाता है। भारतीय पान लगभग तीस देशों में निर्यात किया जाता है। जिससे लगभग 1.55 करोड़ अमरीकी डॉलर विदेशी मुद्रा के रूप में भी प्राप्त होते हैं। पान अत्यन्त कोमल और नाज़ुक होता है और इसकी खेती में आमदनी के साथ लागत भी अधिक होती है। ऐसी स्थिति में यदि फसल किसी प्राकृतिक आपदा, अधिक ठण्ड, अधिक गर्मी, ओलावृष्टि और पाला पड़ने से नष्ट हो जाती है तो किसान का नुकसान भी बहुत अधिक होता है और इसकी खेती पर आंशिक रूप से खराब न होकर पूरी की पूरी एक साथ खराब हो जाती है। खेती को नुकसान होने पर क्षतिपूर्ति के मानक गृह मंत्रालय के आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा तैयार किए जाते हैं, जिसमें पान की खेती सम्मिलित नहीं है। जिसके कारण इस खेती में नुकसान होने पर किसानों को किसी भी प्रकार का मुआवजा नहीं मिलता है। इसके अतिरिक्त मैं यह भी बताना चाहूंगा कि पान की खेती करने वालों को किसी प्रकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता उपलब्ध नहीं कराई जाती है, क्योंकि पान की खेती राष्ट्रीय बागवानी मिशन में भी सम्मिलित नहीं है। पान की फसल को कृषि का दर्जा प्राप्त होने के बाद भी किसान को केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को दिए जा रहे सहायता अनुदान का लाभ नहीं मिलता है। पान की खेती करने वालों को विशेष प्रशिक्षण हेतु वर्ष 1980 में एनबीआरआई द्वारा बनथरा लखनऊ और महोबा में पान अनुसंधान केंद्र खोला गया, जिसे वर्ष 2002 में एनडीए सरकार द्वारा बंद कर दिया गया, जबकि इनसे पान किसान लाभांवित हो रहे थे। मेरा माननीय गृह मंत्री जी से अनुरोध है कि आप आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा तैयार की गई स्टेट तथा नेशनल डिजास्टर रिस्पोंस फंड के दिशा-निर्देशों में परिवर्तन करते हुए पान की खेती को भी सम्मिलित करें। मेरा माननीय कृषि मंत्री जी से भी अनुरोध है कि पान की खेती को राष्ट्रीय बागवानी मिशन में सम्मिलित करें तथा बनथरा लखनऊ और महोबा में बंद पड़े एनबीआरआई के पान अनुसंधान केन्द्र को पुनः खोला जाए।

श्री कमल किशोर 'कमांडो' (बहराइच) : महोदय, मैं अपने आपको श्री पुनिया द्वारा उठाए गए विषय से सम्बद्ध करना चाहता हूं।